सामान्य हिन्दी

Trickly Notes डाउनलोड

For All Exams

By आदर्श कुमावत

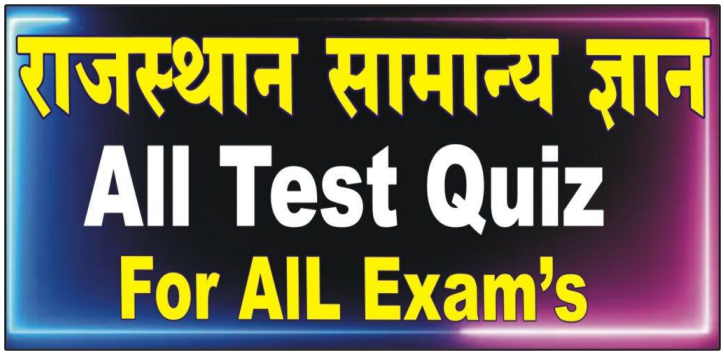

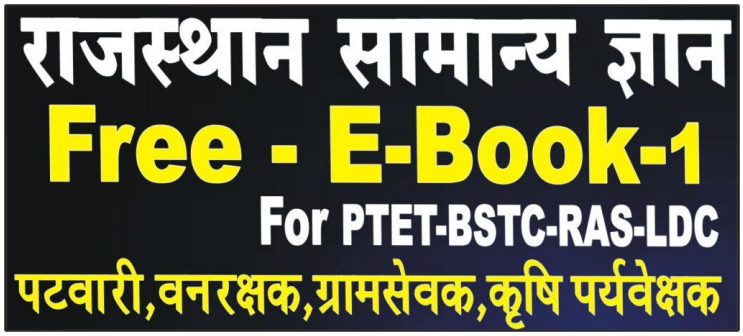

शिक्षण अभिरुचि MCQ

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

* हिन्दी *

"उपसर्ग"

उदाहरण → आ, अव, उप, अप, अपि, अभि, अति
अधि, अनु, सम्, सु, नि, वि
निर्, निस्, दुर्, दुस्,
प्र, परा, प्रति, परि।

नोट → सब उपसर्ग में मात्राएं छोटी आएगी।
जैसे - अतीत = "अति" उपसर्ग

* → दुश्शासन -
A. दु B. दुः C. दुस् D. दुश
सही - दुस् (C), (दुः) तो विसर्ग संधि का उदाहरण है।

* निश्शुल्क (निस्) + (शुल्क)

* उदाहरण - "अप्रत्याशित" में मूल शब्द।
→ अ + प्रत्याशित
→ प्रति + आशित (मूल शब्द)
→ आशा + इत (प्रत्यय लुप्त था)
इसलिए आशा मूल शब्द है।

आ - आजन्म, अव - अवगुण, उप - उपवन
अप - अपशब्द, अपि - अपिधान, अभि - अभ्यास (यण संधि)
अति - अत्यधिक, अधि - अध्यक्ष, अनु - अनुकरण
सम् - सम्मान, सु - सुयोग, नि - निवारण, वि - विदेश
निर् - निर्बल, परा - पराजय, प्रति - प्रतिवर्ष, परि - पर्यावरण।

⇒ उपन्यास में मूल शब्द - उप + न्यास
(नि + आस (मूल शब्द)

ध्यान रहे - यण संधि - अति, अभि, अधि में सीधे भासर रहेंगे।

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

प्रत्यय

→ वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में लगकर उस शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते है अर्थात नए अर्थ का बोध कराते है।

जैसे - समाज + इक - सामाजिक
सुगन्ध + इत - सुगन्धित

↳ प्रत्यय लगने पर शब्द एवं शब्दांश में संधी नही होती। बल्कि शब्द के अंतिम वर्ण में मिलने वाले प्रत्यय के स्वर की मात्रा लग जाती है, व्यंजन होने पर वो यथावत रहता है

स्वर - लोहा + आर = लुहार
व्यंजन - नाटक + कार - नाटककार

उदाहरण - आकू - लड़ाकू, पढ़ाकू
अक - लेखक, गायक, पाठक
आ - झूला, ठेला, मेला
अ - मार, लूट, तोल, लेख
आ - पूजा, घेरा, झटका
अन्त - भिड़न्त, रटन्त
आई - बुराई, भलाई, जुलाई।
इमा - लालिमा, गरिमा, मधुरिमा
त्व - पशुत्व, मनुष्यत्व, धनत्व
आल - ससुराल, ननिहाल।

★ प्रत्यय - दो (2) प्रकार के होते है

1. कृत (कृदन्त) प्रत्यय - जो संस्कृत की मूल ~~भाषा~~ धातुओ के साथ जुड़कर संज्ञा अथवा विशेषण का रूप लेते है

2. तद्धित प्रत्यय - धातु के अतिरिक्त संज्ञा विशेषण आदि शब्दो में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते है

⇒ प्रत्यय की पहचान -

1.→ किसी शब्द के अन्त में "य" हो तथा "य" से पहले आधा वर्ण हो वहा "य" प्रत्यय ही आयेगा (न कि "अ" प्रत्यय)

जैसे - माधुर्य - मधुर + य, शौर्य - शूर + य, आदित्य - अदिति + य
दैत्य = दिति + य "

(2.) यदि शब्द के अन्त में "य" लेकिन 'य' से ठीक पहले आधा वर्ण नहीं हो तो वहां 'य' से ठीक पूर्व वाले स्वर के अनुसार प्रत्यय मानना चाहिए जैसे।

भारतीय - भारत + ईय , मानवीय - मानव + ईय
जातीय - जाति + इय , करणीय - करण + ईय ।

3. यदि कोई शब्द किसी से उत्पन्न होने का भाव प्रकट करता है या सन्तानसूचक / वंश सूचक / सम्बंध सूचक होता है तो वहां "अ" प्रत्यय ही मानना चाहिए।

जैसे - कौरव = कुरु + अ , शैव = शिव + अ
वैष्णव - विष्णु + अ , गौरव = गुरु + अ ।

* प्रत्यय जुड़ने पर प्रारम्भिक स्वर में होने वाले परिवर्तन के नियम

(i) प्रथम स्वर 'अ' होने पर आ में बदल जाता है और अंतिम स्वर उ, ऊ, होने पर अव् में बदल जाएगा।

- मनु + अ = मानव
- दशरथ + इ = दाशरथी
- मधुर + य = माधुर्य
- स्वस्थ + अ = स्वास्थ्य

म - मा
द - दा
म - मा
स्व - स्वा

(ii) प्रथम स्वर इ/ई/ए होने पर "ऐ" में बदल जाता है

- इतिहास + इक = ऐतिहासिक
- निराशा + य = नैराश्य

(iii) प्रथम स्वर उ/ऊ/ओ होने पर औ में बदल जाता है

उद्योग + इक = औद्योगिक , कुंती + एय = कौन्तेय
भूत + एक = भौतिक , कुशल = कौशल

(iv) प्रथम स्वर "ऋ" होने पर 'आर्' में बदल जाता है

- गृहस्थ + य = गार्हस्थ्य
- पृथक + य = पार्थक्य ।

* समास *

Trick =

द्वन्द्व में 'और' छिपे, द्विगु में गणना पद आवत है।
बीच में कारक चिन्ह छिपे, तत्पुरुष समास कहावत है।
अव्ययी में अव्ययी भाव रहे, कर्मधारय विशेषण कहावत है
बहुव्रीहि में अन्य प्रधान रहे, न कोई पद आवत है।

(1) → द्वन्द्व ⇒ जिसमें दोनो पद प्रधान होते हैं
तथा विग्रह करने पर और, अथवा या एवं आता हो।
Trick - दोनो शब्द एक-दूसरे के उल्टे होते हैं (विलोम)
* पाप पुण्य - पाप और पुण्य
* सुख दुःख = सुख और दुःख
* गुण दोष - गुण और दोष।

(2) द्विगु ⇒ प्रथम शब्द संख्यावाची होता है, किसी समूह का बोध कराता हो।
→ नवरत्न - नौ रत्नो का हार, द्विवेदी - दो वेदो का ज्ञाता।
→ चौराहा - चार राहो का संगम

(3). तत्पुरुष समास = दूसरा पद प्रधान एवं दोनो पदो के बीच में कारक चिन्हो का लोप।
1. कर्म - को 2. करण - से, (के द्वारा) (iii) सम्प्रदान - के लिए
4. अपादान - से (अलग होना), 5. सम्बंध - का की के, 6. अधिकरण - में, पर
नोट - इसमें कर्ता व सम्बोधन कारक नहीं होता।

उदाहरण → सभी कारक तत्पुरुष समास के उदाहरण।
(i) यश प्राप्त - यश को प्राप्त (कर्म) -
(ii) हस्तलिखित - हस्त से लिखित (करण) के द्वारा
(iii) देश निकाला - देश से निकाला (अपादान) अलग
(iv) राजप्रासाद - राजा का प्रासाद (सम्बन्ध) का की के ना नी ने
(v) रणवीर - रण में वीर (अधिकरण)
(vi) पर्वतारोहण - पर्वत पर आरोहण (अधिकरण)
(vii) देशभक्ति - देश के लिए भक्ति - सम्प्रदान (के लिए)

Download More Pdf:- https://rajasthanclasses.in/

अव्ययी ⇒ पहला पद अव्ययी एवं प्रधान हो
जिन शब्दो के प्रारम्भ में उपसर्ग लगा हो।
जैसे - प्रति, आ, हर, बे, नि, एक, अति, यथा, उप
→ यथारूप - रूप के अनुसार, आमरण - मरण तक
- प्रतिक्षण - प्रत्येक क्षण, प्रत्येक - प्रति एक
→ बेवजह - बिना वजह के, उपकूल - कूल के समीप की।

एक ही शब्द दो से अधिक बार आने पर
जैसे - हाथो हाथ - तुरंत कार्य
बीचो बीच - बीच के भी बीच में
दिनो दिन - कुछ ही दिन में

* कर्मधारय - समास का द्वितीय पद प्रधान होता है।
पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है।
Trick - विग्रह करने पर बीच में "है जो" व "के समान" आएगा
→ चरणकमल - कमल के समान चरण
→ महापुरुष - महान है जो पुरुष
→ मृगनयन - मृग के समान नयन
→ लालमणि - लाल है जो मणि।
→Note: उपमान एवं उपमेय का लोप भी होता है।

* बहुव्रीहि - इस समास में कोई भी पद प्रधान नही होता
दोनो पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत।
Trick - विग्रह करने पर तीसरे अर्थ का निकलना।

→ उदाहरण - चतुर्भुज - चार है भुजाएं जिसकी ∴ विष्णु जी
लम्बोदर - लम्बा है उदर जिनका - गणेश जी
दशानन - दश है सिर जिसके - रावण
चक्रधर - चक्र धारण करने वाला - श्रीकृष्ण।

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

* पर्यायवाची *

* पानी - अम्बु, जल, नीर, पयो, वारि, तोय, पाथ
अम्भ, आब, उदक, अप, जीवन, सलिल।

* बादल - अम्बुद, जलद, नीरद, पयोद, वारिद, तोयद
अम्बुधर, धाराधर, वारिधर, जलधर, मेघ, अभ्र, घन।
नोट - यदि पानी के पर्यायवाची मे 'द' या 'धर' जोड दे
तो बादल के पर्यायवाची बन जाते है।

* कमल = अरविद, इन्दीवर, उत्पल, ताम्ररस, नलिन
पुष्कर, राजीव, शतपत्र, सरसिज, सरोज, सरोरुह
अम्बुज, जलज, नीरज, पयोज, वारिज, तोयज, अब्ज
एव पकज। (ज - में जन्म लेने वाला = जैसे पानी मे)
नोट - पानी के पर्यायवाची मे "ज" जोडकर भी
कमल के पर्यायवाची बनाए जा सकते है।

* समुद्र :- रत्नाकर, वर्णालय, सागर, सिंधु, नदीश
मकरालय, अम्बुधि, जलधि, नीरधि, पयोधि, वारिधि
तोयधि, क्षीरानीधि, जलानिधी, पयोनिधि।
नोट - प्रायः पानी के पर्यायवाची मे "निधी" व "धि" को
जोडकर समुद्र का पर्याय बना दिया जाता है
निधी या धी का अर्थ - भण्डार (जैसे पानी का भण्डार)
सन्धि का प्रयोग करके भी हल कर सकते।
* जैसे - मकरालय (मछली का आलय) नदीश - नदी का ईश -

* इन्द्र = मघवा, मेघराज, वज्रधर, वज्रधर, वज्री, विडौजा
पुरन्दर, पुरहूत, शचीपति, सहस्राक्ष, इसके अलावा मेघ -
→ अमर, देव, एव सुर मे पति, इन्द्र, ईश, ईश्वर जोडकर
अमरपति, अमरेश्वर, अमरेन्द्र, देवपति, देवेन्द्र, देवेश, सुरपति,
सुरेन्द्र, महेन्द्र, सुरेश, सुरेश्वर, तथा वासव, आदि।

* गंगा → जाह्नवी, त्रिपथगा, भागीरथी, मन्दाकिनी, विष्णुपुरी, देवनदी देवापगा, सुरतंरगिणी, सुरसरिता, स्वर्गतरंगीनी स्वर्गापगा, सुरसरि etc.

नोट - प्राय: देव, स्वर्ग, एवं सुर शब्दो के साथ "नदी" के पर्यायवाची जुडते है।

* कामदेव - अनंग, कन्दर्प, मदन, मनोज, मनसिज, बसंतसखा
* बसंतबन्धु, मन्मथ, मार, स्मर, काम, इसके अलावा →

नोट → कुसुम (फूल) के पर्यायवाची मे "बाण" के पर्यायवाची जोड देते है। जैसे

कुसुमबाण, कुसुमशर, पुष्पधन्वा, पुष्पशर

नोट - मछली" पर्याय मे "ध्वज" के पर्याय जोडते है तो भी - मीनकेतन, मकरध्वज, झषकेतु

नोट → रति (कामदेव की पत्नी) के पर्याय मे पति के पर्याय जोडने पर , रतिकान्त, रतिनाथ, रतिपति, रतिवल्लभ -

* गणेश - हेरम्ब, एकदन्त, वक्रतुण्ड, विनायक, सिद्धिविनायक लम्बोदर etc.

नोट - पार्वती पर्याय के साथ पुत्र के पर्याय जोडने पर। उमासुत, पार्वतीनंदन, भवानीनंदन, पार्वतीसुत।

* चन्द्रमा - मयंक, मृगांक, हिमकर, सुधाकर, राकेश, शशांक
* इन्दु, विधु, शशि, सोम, सुधांशु, हिमांशु, कलानिधि।

नोट - रात, कुमुदिनी, तारा के पर्याय में कर, ईश, कान्त, नाथ पति जोडकर - निशाकान्त, निशाकर, विभाकर, रजनीश रजनीकर, क्षपाकर, कुमुदिनीपति, तारापति, तारानाथ, ताराकान्त

* * सूर्य - अंशुमान, अंशुमाली, सविता, आदित्य, पतंग, भास्कर भानु, हंस, मार्तण्ड, अर्क, मित्र, मिहिर, रवि सप्ताश्व, सूरज, कालिन्द, दिनकर, दिनमणि

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

* यमुना - यमी, यमानुजा, सूर्यजा, भानुजा, सूर्यतनया
सूर्यपुत्री, कालिन्दजी, हंसयुता
नोट - सूर्य के पर्याय में "पुत्री" के पर्याय जोड़कर "यमुना" का पर्यायवाची बनाया जा सकता है।
जैसे - तनया, जा, पुत्री, सुता।

* राक्षस - असुर, दानव, दैत्य, दनुज, सुरारि, यातुधान
निशाचर, रात्रिचर, रजनीचर, तमीचर।
नोट - रात के पर्यायवाची में चर जोड़ने पर -

* शिव - आशुतोष, कपर्दी, गंगाधर, चन्द्रभाल, नटराज
नीलकण्ठ, पशुपति, भूतनाथ, मृत्युंजय, रुद्र, वृषवाहन, शम्भु
नोट - पार्वती के पर्याय में "पति" जोड़ने से -
उमापति, गौरीपति, उमाकान्त, पार्वतीनाथ।

* पार्वती - उमा, काली, गिरिजा, अन्नपूर्णा, अपराजिता
त्रिपुरसुन्दरी, महाशक्ति, मृडानी, सिंहवाहिनी, हैमवती।
नोट - शिव की पत्नि का भाव जोड़कर -
भुवनेश्वरी, महादेवी, माहेश्वरी, रुद्राणी, शैलजा, शैलपुत्री

* विष्णु - कैटभारि, चक्रपाणि, जगन्नाथ, जनार्दन
पद्मनाभ, पुण्डरीकाक्ष, पुराणपुरुष, मुकुन्द, यज्ञपुरुष
शंखपाणि, शेषशायी, हरि, हृषीकेश
नोट - लक्ष्मी पर्याय में पति का पर्याय जोड़ने पर →
लक्ष्मीकांत, कमलाकान्त, श्रीकांत, रमाकान्त, लक्ष्मीपति

* किरण - रश्मि, कर, मरीचि, मयूख, अंशु।

* कृष्ण - श्याम, कन्हैया, वासुदेव, मोहन, नन्दलाल, मुरलीधर
बनवारी, माधव, मधुसुदन, गिरिधर, गोपाल, सांवरिया

*

* तत्सम एवं तद्भव *

1 तत्सम शब्द - तत् + सम

उसके (संस्कृत) — समान / जैसा

तद्भव - तत + भव (परिवर्तन)

उसके / संस्कृत — बनना / होना

जैसे - संस्कृत हस्त - परिवर्तन ⟷ हिन्दी हाथ

संध्या - परिवर्तन ⟷ शाम (सांझ)

दिन - तत्सम एवं तद्भव दोनो है।

Ex. * जब तीन शब्द तद्सम हो तो दिन को तत्सम मे "दिवस" कहेगे।

✓ जाग्रत - जागृत (हिन्दी में शब्दशुद्ध सही)
(तत्सम) (तद्भव)

बन्दना - वंदना (शब्दशुद्ध सही माना)

तत्सम एवं तद्भव शब्द की ट्रिक

ध्यान रहे - ये नियम नही तरीके है, 99% ट्रिकी।

Ex. * ① प्रायः तत्सम में 'क्ष' तथा तद्भव में 'ख' प्रयोग

* तत्सम		तद्भव *
आक्षि	-	आंख
कुक्षि	-	कोख
क्षार	-	खार
* ईक्षु	-	ईख

② प्रायः तत्सम शब्द मे "व" तथा तद्भव मे "ब" का प्रयोग होता है

तत्सम		तद्भव
वणिक	-	बनिया
वर्षा	-	बरसा
वक	-	बगुला
विवाह	-	ब्याह

Note
प्रायः तत्सम (संस्कृत) का उच्चारण कठिन है
एवं तद्भव (हि-दी) का उच्चारण बिल्कुल आसान है।

3. प्रायः तत्सम में 'श' (तालु) तथा तद्भव में 'स' (दन्त) का प्रयोग।

तत्सम	तद्भव
शाक -	साग
शुक -	सुआ
शुण्ड -	सूंड
श्यामल -	सावला
श्वसुर -	ससुर

4. प्रायः तत्सम में 'य' तथा तद्भव में "ज" का प्रयोग होता है

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
युवा -	जवान	यदा -	जब
युग -	जुग	योग -	जोग
यदा -	जब	यत्र -	जहाँ

5. तत्सम शब्दो मे "ऋ" का प्रयोग होता ही है

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
घृणा -	घिन	शृंगार -	सिंगार
गृहिणी -	घरनी	भ्रातृभार्या -	भाभी

6. "त्र" का प्रयोग तत्सम शब्दो में होता है तद्भव (त)

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
मित्र -	मीत	रात्री -	रात
पत्र -	पत्ता	राजपुत्र -	राजपूत

7. चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग तद्भव में मिलता है।

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
चन्द्र -	चाँद	पुच्छ -	पूँछ
मुख -	मुँह	पञ्च -	पाँच

(8) प्रायः "र" के रुप तत्सम शब्दो में मिलते है (׳ ^ ͨ)
(कोई वर्ण आधा हो)

तत्सम	तद्भव		
स्वर्णकार -	सुनार	द्विपहरी -	दोपहरी
ताम्र -	ताम्बा	स्पर्श -	परस

'सन्धि'

सन्धि- दो वर्णों के मेल से होने वाला विकार ही संधी

संधी के तीन प्रकार- स्वर, व्यंजन, विसर्ग

स्वर सन्धी → स्वर के साथ स्वर का जो विकार होता है उसे ही स्वर संधी

1. दीर्घ संधी
2. गुण संधी
3. वृद्दि संधी
4. यण संधी - (5) अयादि संधी

(1) दीर्घ सन्धि = पहचानने की ट्रिक
जिसमे बडी मात्रा हो (आ, ई, ऊ)
जैसे- शरणागत = शरण + आगत
रवीन्द्र - रवी + इन्द्र
भानूदय - भानू + उदय, सूक्ति - सू + उक्ति

(2) गुण संधि - पहचानने की ट्रिक
ए, ओ (जहां एक मात्रा का प्रयोग)
नरेन्द्र, महोदय -, वीरोदय, परमेश्वर

नोट - अ/आ + ऋ = अर् (जैसे - महार्षि)

(3) वृद्दि संधि - पहचानने की ट्रिक
↳ जहां दो मात्राएं लगी (ै ौ)
जैसे एकैक, सदैव, हितैषी, वनौषध

(4) यण स्वर संधी → पहचानने की ट्रिक
शब्द में य, र, व के पहले आधा शब्द हो।
जैसे - इत्यादि, प्रत्येक, स्वागत, अन्वेषक

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

5. अयादि संधि – पहचानने की ट्रिक
अय, आय, अव, आव का उच्चारण।
ए, ओ, औ की मात्रा नहीं होगी।
↳ परन्तु विच्छेद में ये मात्राए जरूरी होगी)

गायक = (आय) पावन = (आव)
नयन – (अय) नायिका – (आय)

② व्यंजन संधि – नियम – ①
- क का ग् = दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन
- त का द = सत् + विचार = सद्विचार
- च का ज = अच् + अन्त = अजंत
- ट का ड् = षट् + आनन = षडानन
- प का ब = अप् + ज = अब्ज

(नियम – 2)
= किसी वर्ग का + न, म = प्रथम वर्ण = प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का पांचवा वर्ण।
जैसे – वाक् + मय = वाङ्मय
उत् + मेष – उन्मेष
षट् + मूर्ति = षण्मूर्ति

= नियम ③
त + च|छ = च्च|च्छ
✓ सम् + उत् + चय = समुच्चय
✓ ~~उत् + छिन्न~~ =
✓ उत् + छिन्न = उच्छिन्न
✓ उत् – चारन = उच्चारन
* त + ट|ठ = ट्ट|ट्ठ
↳ वृहत् + टीका = वृहट्टीका
↳ तत् + टीका = तट्टीका

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

नियम - (4)

(1) त | द + श = च्छ , (2) कोई स्वर + छ = च्छ

उत् + श्वास = उच्छ्वास	आ + छादन = आच्छादन
उत् + श्रृंखल = उच्छृंखल	अनु + छेद = अनुच्छेद

नियम - (5) नियम = द् + ह = द्ध

- उद् + हार = उद्धार
- उद् + हरण = उद्धरण
- पद् + हति = पद्धति

नियम - (6) : म् + क से भ तक कोई भी स्पर्श व्यंजन

म् के स्थान पर उसी वर्ग का पंचमवर्ण | अनुस्वार

जैसे = सम् + कल्प = संकल्प

सम् + ध्या = संध्या

तीर्थंकर = तीर्थम् + कर

नियम : (7) म् + म = म्म

सम् + मति = सम्मति

सम् + मोहन = सम्मोहन

नियम - (8) म् + य र ल व श ष स ह = म् के स्थान पर अनुस्वार

सम् + योग = संयोग

सम् + शय = संशय

नियम : (9) न के स्थान पर (ण)

भर + न = भरण , शोष् + अन् = शोषण

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

नियम = (10)

अ व आ के अलावा कोई + स = स के स्थान पर भिन्न स्वर

- वि + सम = विषम
- परि + सद = परिषद
- उपनिषद = उपनि + सद्

नियम = (11) ष + त = ष्ट, ष् + थ = ष्ठ

- आकृष् + त = आकृष्ट
- षष् + थ = षष्ठ
- सृष् + ति = सृष्टि

नियम = (12) द् + क, त, थ, प, म = द् का त हो जाता है

- ~~उत्कोच~~ = उत्कोच = उद् + कोच
- उद् + तर = उत्तर
- विपद् + ति = विपत्ति
- आपद् + ति = आपत्ति

नियम - (13) त्द + द् + म = ण्म

मृण्मय = मृद् + मय

मृण्मूर्ति = मृद् + मूर्ति

नियम - (14) सम् + कृत / कृति / करण / कार आदि।

म् का अनुस्वार बन जाता है एवं स् का आगम हो जाता है।

- सम् + कृत = संस्कृत
- सम् + कार = संस्कार

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

* वाक्यांश के लिए एक शब्द *

* अनार्य - जो श्रेष्ठ गुणों से रहित हो।
* अतिथि - जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो।
* अछूता - जो छुआ न गया हो।
* अछूत - जो छूने योग्य न हो।
* अग्रज - जो पहले जन्मा हो (बड़ा भाई)
* अज्ञेय - जिसे जाना नजा सके।
* अनूढा - जिस स्त्री का विवाह न हुआ हो।
* अशक्य - न हो सकने वाला कार्य।
* अशोच्य - जो शोक करने योग्य न हो।
* अपथ्य - जो भोजन रोगी के लिए निषिद्ध है।
* अनन्य - अन्य से सम्बंध न रखने वाला।
* अध्यूढा - वह स्त्री जिसके पति ने दूसरी शादी करली हो।
* अयाचित - जो बिना मांगे मिल जाए।
* अरसिक - जो साहित्य-कला आदि में रस न ले।
* अप्रहृत - जिस वस्त्र को पहना न गया हो।
* अपकर्ष - नीचे की ओर लाना या खींचना।
* परोक्ष/अप्रत्यक्ष - जो सामने न हो।
* अनुगामी - पीछे-2 चलने वाला।
* अनिमेष (निर्निमेष) - पलक को झपकाए बिना।
* अनाहूत - जिसे बुलाया न गया हो।
* अनावृत - जो ढका हुआ न हो।
* अनुरक्त - जिसका किसी से लगाव हो।
* अनिकेत - जिसका कोई घर न हो।
* अनामिका - कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उंगली
* अन्त्यज - जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ हो।
* अद्यतन - जो आजतक से सम्बंध रखता हो।
* अगोचर - जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके।
* अभियुक्त - जिस पर मुकदमा चलाया गया हो।
* अनिर्वचनीय - जिसका भाषा द्वारा वर्णन न किया जा सके।
* अनवगत - जिसके विषय में कोई ज्ञान न हो।
* ~~अधित्यका~~ अधित्यका - पहाड़ के ऊपर की समतल जमीन।
* अनुकरणीय - अनुकरण करने योग्य।
* आततायी - जो बहुत क्रूर व्यवहार करता हो।
* आक्रान्त - वह जिस पर हमला किया गया हो।

"वाक्यांश के लिए एक शब्द"

* असूर्यंपश्या - जो स्त्री सूर्य भी नहीं देख पाती।
* अनित्यवादी - वह सिद्धांत जो हर वस्तु को नश्वर मानता हो।
* अनुस्मारक - पहले लिखे गए पत्र का स्मरण करते हुए लिखा गया पत्र।
* अतिश्योक्ति - किसी बात को अधिक बढ़ाकर कहना।
* अव्यवहृत - जिसको व्यवहार में न लाया जा सके।
* अधोहस्ताक्षरकर्ता - जिसने हस्ताक्षर नीचे अंकित हो।
* आगतपतिका - वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो।
* आजीविका - जिसकी जीविका निश्चित न हो।
* इन्द्रियनिग्रह - इन्द्रियों को वश में करने वाला।
* ईशान/ईशान्य - उत्तर से पूर्व के बीच की दिशा।
* उरग - जो छाती के बल गमन करने वाला हो।
* उदयाचल - वह काल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्य का उगना माना जाता।
* उपत्यका - पर्वत के नीचे तलहटी की भूमि। (अधित्यका - पहाड़ के ऊपर की भूमि)
* उच्छिष्ट - भोजन करने के बाद बचा हुआ जूंठन।
* ऊहापोह - अनिर्णय की स्थिति।
* ऐन्द्रजालिक - इन्द्रियों को भ्रमित करने वाला।
* ओझा - भूत-प्रेत के भय को मंत्रों से झाड़ने वाला।
* कूपमंडूक - वह व्यक्ति जिसका ज्ञान अपने ही स्थान तक सीमित हो।
* कथोपकथन - दो व्यक्तियों की परस्पर होने वाली बातचीत।
* किंकर्तव्यविमूढ - जिसे अपना कर्तव्य नहीं सूझता हो।
* खग्रास - सूर्यग्रहण / चन्द्रग्रहण
* खेचर - आकाश में चलने वाला।
* खण्डिता - वह स्त्री जिसका पति अन्य स्त्री के साथ रात गुजारकर लौटे।
* गूढोक्ति - रहस्यपूर्ण बात।
* घुन्ना - अपने मन के भावों तक ही सीमित रखने वाला।
* चम्पू - ऐसा काव्य जिसमें गद्य एवं पद्य का मिश्रण हो।
* चिरकुट - ज्यादा फटा हुआ कपड़ा।
* चिकीर्षा - कार्य करने की इच्छा
* च्युत - जो अपने निश्चित स्थान से गिर गया हो।
* छद्मवासी - जो गुप्त रूप से निवास कर रहा हो।
* ज्वालामुखी - वह पहाड़ जिसके मुंह से आग निकले।
* प्रदोष - संध्या व रात्रि के मध्य का समय।
* पाथेय - मार्ग में खाने के लिए भोजन।

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

* मुक्तकंठ - दिल खोलकर कहना
* तकावी - वह राजकिय धन जो किसानो की सहायता हेतु दिया जाता।
* तापत्रय - दैहिक, दैविक व भौतिक दुःख।
* तितीर्षा - तैरकर पार करने की इच्छा।
* तुणीर - बाणो को रखने का स्थान।
* दुर्वह - जिसको कठिनाई से वहन किया जा सके।
* दुर्ज्ञेय - जिसे कठिनाई से जाना जा सके।
* दावाग्नि - जंगल में फैलने वाली आग।
* दार्शनिक - प्रत्येक विषय का सूक्ष्मता से विश्लेषण करने वाला
* दकियानूस - संकुचित विचार रखने वाला व्यक्ति।
* दिवास्वप्न - जो सपना दिन में देखा जाए।
* दुरभिग्रह - जिसको पकड़ने मे कठिनाई हो।
* देवाराध्य - जिसे देवता भी पूजते है
* धीवर - मछली पकड़कर आजीविका चलाने वाला।
* धीरोदात्त - श्रेष्ठ गुणो से सम्पन्न शूरवीर नायक।
* धीरोद्धत - शूरवीर किन्तु अभिमानी व्यक्ति।
* धीरललित - शूरवीर किन्तु क्रीड़ाप्रिय नायक।
* नेपथ्य - रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान
* नैष्ठिक - आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेने वाला
* निर्मम - जो ममत्व से रहित हो।
* निस्संग/असंग - जिसको किसी में भी आसक्ति न हो।
* नित्य - जो विनाश को प्राप्त न हो सके।
* निरापद - जिसे किसी भी प्रकार का भय या हानि न हो।
* निरामिष - जो मांसाहार नही करता।
* नजराना - सम्मान मे दी जाने वाली भेंट
* यथेच्छ - इच्छा के अनुसार
* यमल/यमला - जुड़वा भाई/बहिन
* यवनिका - रंगमंच का परदा, नेपथ्य - रंगमंच परदे के पीछे का स्थान।
* युयुत्सु - युद्ध की इच्छा रखने वाला
* यायावर - घूम फिरकर जीवन बिताने वाला व्यक्ति।
* रजस्वला - जिस स्त्री को मासिक रक्तस्राव हुआ हो।
* राजपत्र - राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित होने वाला पत्र।
* लिपिबद्ध - जो विचार लिख दिए गए हो।
* लेह्य - जो चाटने योग्य हो।

- पथ्य - जो भोजन रोगी के लिए उचित है।
- पार्थिव - पृथ्वी से सम्बंधित
- पयोहारी - केवल दूध पर जीवित रहने वाला।
- पटाक्षेप - नाटक का परदा गिरना।
- प्रत्याशा - किसी कार्य के बदले में की जाने वाली आशा।
- प्रहसन - हास्य रस से परिपूर्ण नाटिका।
- पराधीन - जो दूसरे के अधीन हो।
- प्रष्टव्य - जो पूछने योग्य हो।
- परिव्राजक - घूमने फिरने वाला साधु।
- पतिम्बरा - पति को चुनने की इच्छा रखने वाली कन्या।
- प्रत्यागत - लौटकर आया हुआ।
- प्रोषितपतिका - जिसका पति परदेश गया हो।
- पिष्टपेषण - एक बार कही हुई बात को दुहराते रहना।
- परमुखापेक्षी - दूसरे का मुंह ताकने वाला।
- फणींद्र - सर्पों का स्वामी।
- बुभुक्षु - खाने का इच्छुक, भोजनभट्ट - जो खूब खाता पीता हो।
- बडवानल - समुद्र में लगने वाली आग।
- भग्नहृदय - जिसका हृदय टूट गया हो।
* भग्नावशेष - किसी भग्नादि के खण्डित होने के बाद बचे भाग।
* भूधर - पृथ्वी को धारण करने वाला पर्वत, भूचर - धरती पर चलने वाला जंतु।
* भौम (मंगल) - भूमि का पुत्र
* भवभूति - संसार का कल्याण चाहने वाला।
* मौलिक - जो रचना कृति की स्वयं की हो या नई हो।
* मीनाक्षी - जिस स्त्री की आंखे मछली के समान हो।
* मुकुल - ऐसा फूल जो पूरा खिला न हो।
* मुमूर्षु - वह व्यक्ति जिसके मरने की आशंका हो।
* मुमुर्षा - मरने की आकांक्षा।
* मुमुक्षु - मोक्ष की इच्छा रखने वाला।
* मर्मज्ञ - जो किसी के हृदय की बात जानता हो।
* महार्घ - जिसका मूल्य बहुत अधिक हो (महंगा)
* मनस्वी - सुख व दुःख में समान रहने वाला।
* महोदधि - जिसमें अपार जलराशि हो।
* मृत्युंजय - मृत्यु को जीतने वाला।
* मर्महत - जिसके हृदय को चोट पहुंची हो।

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

* लोमहर्षक - जिसे देखकर रोंगटे खड़े हो गए हो
* वादी - मुकदमा दायर करने वाला।
* वाग्मी - भाषण देने में चतुर
* विधुर - जिसकी पत्नी मर गई हो।
* वाचाल - जो अधिक बोलता हो।
* वाग्दान - कन्या का विवाह कर देने का वचन देने की रस्म
* वयःसंधि - बचपन व यौवनावस्था के मध्य की उम्र।
* वामाचारी - सामाजिक मान मर्यादा के विपरीत कार्य करने वाला।
* वास्तुविज्ञान - स्थापत्य से संबंधित (गृह निर्माण)
* शतावधानी - जो सौ बात एक साथ याद रख सकता हो।
* शोधवृत्ति - अनुसंधान के लिए दिया जाने वाला अनुदान
* शाश्वत - हमेशा रहने वाला।
* शूलपाणि - जिसके हाथ में त्रिशूल हो (भगवान शिव)
* स्त्रैण - स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला।
* सुषुप्त - जो सोया हुआ हो।
* स्पर्धा - किसी काम में दूसरे से आगे बढ़ जाने की इच्छा।
* सुग्रीव - जिसकी गर्दन सुन्दर हो।
* सहगान - अन्य लोगों के साथ गाया जाने वाला गीत।
* सजिल्द - जिस पुस्तक पर जिल्द हो।
* समीक्षक - साहित्यिक गुण-दोषों की विवेचना करने वाला।
* सभासद - जनप्रतिनिधि का सदस्य
* सांघातिक - प्राणों को आघात पहुंचाने वाला।
* सहोदर/सहोदरा - एक ही मां से उत्पन्न भाई/बहिन
* सदावर्त - गरीबों हेतु निःशुल्क भोजन।
* सिसृक्षा - सृजन करने की इच्छा
* स्वेदज - पसीने से उत्पन्न जीव
* स्थानापन्न - जो दूसरों के स्थान पर अस्थायी रूप से नियुक्त हो।
* स्वयंपाकी - जो स्वयं भोजन पकाकर खाता हो।
* संकीर्णवृत्ति - छोटे विचारों वाला, समवयस्क - जो समान उम्र का हो।
* समशीतोष्ण - न बहुत ठण्डा न बहुत गर्म
* सव्यसाची - जो सव्य (बायें) हाथ से भी काम कर लेता हो।
* होनहार - न टलने वाली घटना/अवश्यंभावी घटना
* हरावल - सेना के सबसे आगे का भाग।
* हृदयाकर्षक - जो हृदय को आकर्षित करे

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

प्रतियोगी परीक्षार्थियों हेतु

भारी छूट • निशुल्क कोर्स

ये PDF अपने मित्रों को शेयर करें, आपकी तरह उनकी भी हेल्प होगी।

Course by- AADARSH KUMAWAT

सामान्य ज्ञान

5000+ प्रश्न

For All Exam's

Free Download 😀

Join us on Telegram

YouTube

Websites

https://rajasthanclasses.in/

राजस्थान पुलिस कांस्टेबल

Complete Course

~~301~~/- Now Free

Join us on Telegram

YouTube

Websites

https://rajasthanclasses.in/

Join us on Telegram

YouTube

Websites

https://rajasthanclasses.in/

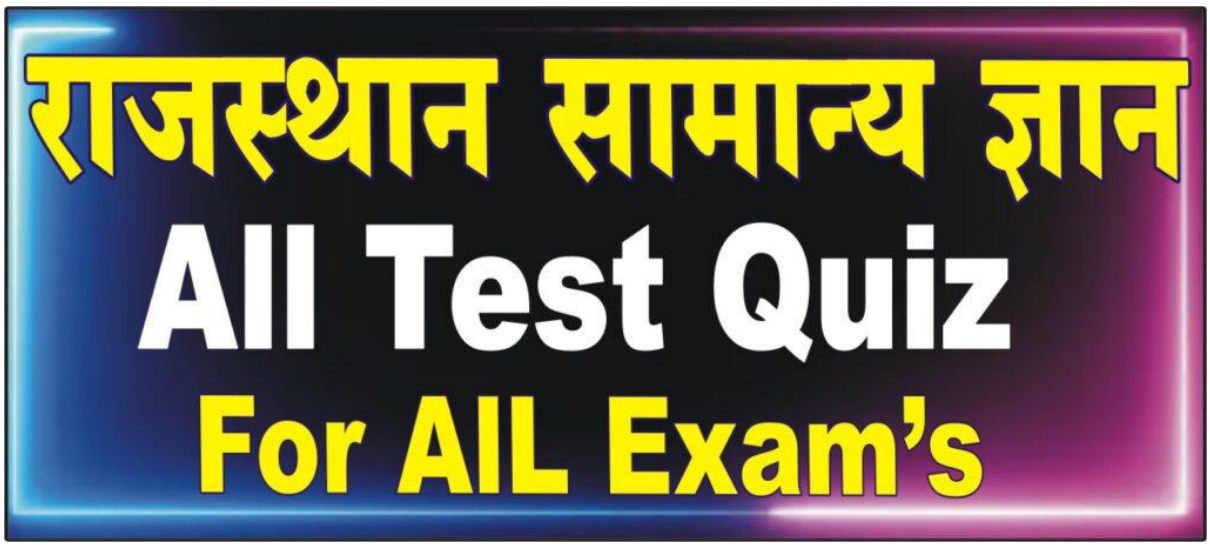

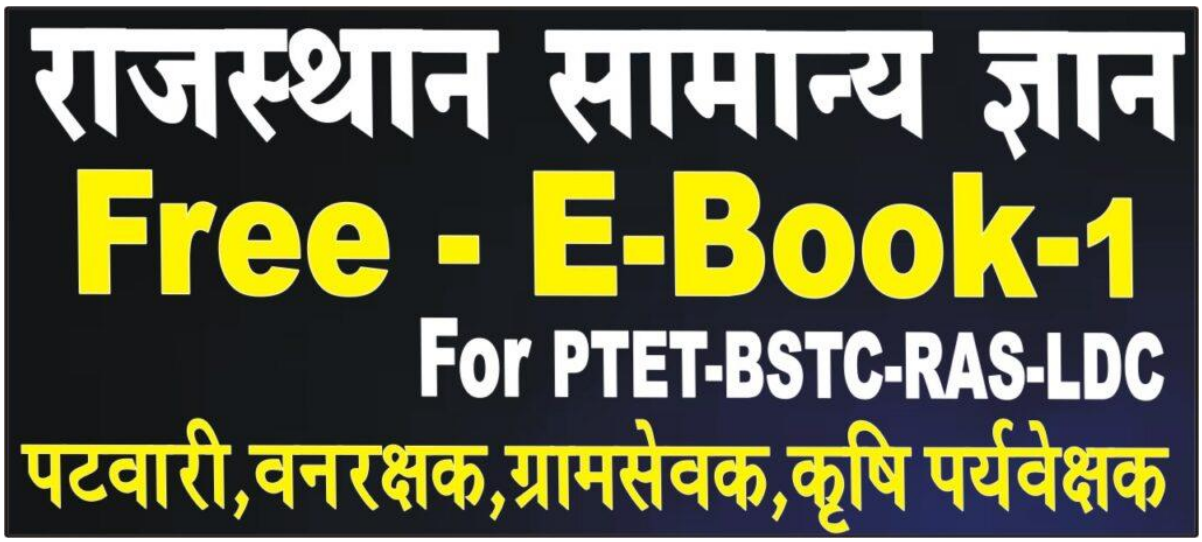

राजस्थान सामान्य ज्ञान
हस्तलिखित नोट्स
निशुल्क डाउनलोड

राजस्थान सामान्य ज्ञान
All Test Quiz
For AlL Exam's

राजस्थान सामान्य ज्ञान
Free - E-Book-1
For PTET-BSTC-RAS-LDC
पटवारी,वनरक्षक,ग्रामसेवक,कृषि पर्यवेक्षक

Join us on Telegram
YouTube
Websites

https://rajasthanclasses.in/

भारत सामान्य ज्ञान

सम्पूर्ण टेस्ट क्विज

अपनी तैयारी को परखें

टॉप 1000 प्रश्न

ई - बुक सामान्य ज्ञान

डाउनलोड करलो

YouTube

Live

Join us on Telegram

YouTube

Websites

https://rajasthanclasses.in/

इन्हें भी अवश्य पढ़ें ?

- विषयवार ई- बुक यहाँ से देखे
- Youtube पर ऑनलाइन क्लासे देखे
- लेटेस्ट पोस्ट (GK क्विज)
- Computer E- book Download
- Rajasthan Gk Questions
- India Gk Questions
- One Liner Gk Questions

PDF BY- AADARSH KUMAWAT

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

इन्हें भी अवश्य पढ़ें ?

- राजस्थान के प्रमुख नृत्य [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख बांध [नोट्स]
- राजस्थान की प्रमुख छतरियाँ [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख दुर्ग [नोट्स]
- राजस्थान की प्रमुख झीलें [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य
- राजस्थान के प्रमुख इतिहासकार [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता [नोट्स]
- राजस्थान के प्रमुख मेलें [नोट्स]

PDF BY- AADARSH KUMAWAT

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

इन्हें भी अवश्य पढ़ें ?

- 250+ राजस्थान सामान्य ज्ञान
- राजस्थान सामान्य ज्ञान पार्ट- 1
- राजस्थान सामान्य ज्ञान पार्ट- 2
- राजस्थान सामान्य ज्ञान पार्ट- 3
- राजस्थान सामान्य ज्ञान पार्ट- 4
- राजस्थान के शिलालेख/अभिलेख [नोट्स]

Join us on Telegram

YouTube

Websites

PDF BY- AADARSH KUMAWAT

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/

Daily Live Class

Join us on Telegram

YouTube

Websites

PDF BY- AADARSH KUMAWAT

Download More Pdf;- https://rajasthanclasses.in/